ASU2A10a-Histoire culturelle de l'aire hindoustani- 2012-12-03

सिख धर्म

सिख धर्म एक एकेश्वरवादी धर्म है। इस धर्म के अनुयायी को सिख कहा जाता है। सिखों का धार्मिक ग्रन्थ 'श्री आदि ग्रंथ' या 'गुरु ग्रंथ साहिब' है। आम तौर पर सिखों के 10 सतगुरु माने जाते हैं, लेकिन सिखों के धार्मिक ग्रंथ में 6 गुरुओं सहित 30 भक्तों की वाणी है, जिन की शिक्षाओं को सिख मार्ग पर चलने के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है। 'गुरुग्रन्थ साहिब' में सिर्फ सिख गुरुओं के ही उपदेश नहीं है, बल्कि 30 अन्य हिन्दू और मुस्लिम भक्तों की वाणियाँ भी सम्मिलित हैं। सिखों के धार्मिक स्थान को गुरुद्वारा कहते हैं।

गुरु नानक देव ने सिख धर्म की स्थापना की। उनका जन्म लाहौर के पास तलवंडी नामक गांव में 1469 ईस्वी में कार्तिक पूर्णिमा के दिन हुआ। इस गाँव को आजकल ननकाना कहा जाता है। उन्होंने गुरमत की शिक्षाओं को खुद जगह-जगह जाकर फैलाया। सिख उन्हें अपना पहला गुरु मानते हैं। गुरमत का प्रचार बाकी 9 गुरुओं ने किया। दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने प्रचार का काम खालसा को सौंपा और 'ज्ञान गुरु ग्रंथ साहिब' की शिक्षाओं पर अमल करने का उपदेश दिया। संत कबीर, रामानंद, परमानंद, नामदेव संत तथा तुकाराम आदि की वाणियाँ आदि ग्रंथ में दर्ज हैं। सिख एक ही ईश्वर को मानते हैं, जिसे वे एक-ओंकार कहते हैं। उनका मानना है कि ईश्वर अकाल और निरंकार है।

पाप और पुण्य दोनों एक समान होते हैं

सिखमत कार्मिक दर्शन में यकीन नहीं रखता। अन्य धर्मो का कहना है कि ईश्वर को अच्छे कर्म पसंद हैं और बुरे कर्म करने वालों के साथ परमेश्वर बहुत बुरा करता है। लेकिन सिख धर्म के अनुसार इंसान खुद कुछ कर ही नहीं सकता। इंसान सिर्फ़ सोचने तक सीमित है। इंसान वही करता है जो ईश्वर के 'हुक्म' में होता है। चाहे वो किसी गरीब को दान दे रहा हो चाहे वो किसी को जान से मार रहा हो। 'हुक्म' से बाहर कुछ नहीं हो सकता। इसीलिए गुरमत में पाप पुन्य को नहीं माना जाता। इंसान जो कुछ भी करे वह 'अंतर आत्मा' के साथ आवाज़ मिला कर करे। गुरमत कर्म कांड के विरुद्ध है। गुरु नानक देव ने अपने समय के भारतीय समाज में प्रचलित कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर्जर रूढ़ियों और पाखंडों को दूर किया। उन्होंने लोगों को धर्म के ठेकेदारों, पंडों, पीरों आदि के चंगुल से मुक्त करने की कोशिश की।

मूर्ति-पूजा का खंडन

सिखमत में भक्तों और सतगुरुओं ने निरंकार को 'आकार रहित' कहा है। सांसारिक पदार्थ तो एक दिन खत्म हो जाते हैं लेकिन परब्रह्म कभी नहीं मरता। इसीलिए ईश्वर को अकाल कहा गया है। यही नहीं जीव-आत्मा भी आकार रहित है और इस शरीर के साथ कुछ समय के लिए बँधी है। यही कारण है कि सिखमत मूर्ति पूजा के खिलाफ़ है। सिख गुरुओं एवं भक्तों ने मूर्ति पूजकों को अंधा, जानवर आदि शब्दों से पुकारा है। ईश्वर की तस्वीर नहीं बनायी जा सकती। यही नहीं कब्रों, भक्तों तथा सतगुरुओं की ऐतिहासक मूर्तियों, प्रतिमाओं आदि की पूजा करना सिखों के बुनयादी सिद्धान्तों के खिलाफ़ है।

अवतारवाद और पैगंबरवाद का खंडन

सिखमत में हर जीव को अवतार कहा गया है। हर जीव उस निरंकार की अंश है। संसार में कोई भी पक्षी, पशु, पेड़, इत्यादि अवतार हैं। व्यक्ति की पूजा सिख धर्म में नहीं है। सिखों के अनुसार अलग-अलग अवतार एक 'निरंकार' की शर्त पर पूरे नहीं उतरते। यही कारण है कि सिख किसी को परमेश्वर के रूप में नहीं मानते। अगर कोई अवतार गुरमत का उपदेश देता है तो सिख उस उपदेश के साथ जुड़े रहते हैं। कृष्ण ने गीता में कहा है कि 'आत्मा मरती नहीं, और जीव-हत्या कुछ नहीं होती'। सिख-घर्म इस बात से तो सहमत है। लेकिन आगे कृष्ण ने कहा है कि 'कर्म ही धर्म है'। ज़ाहिर ही सिख-धर्म इस बात से सहमत नहीं।

इसी तरह पैग़म्बर वो है जो निरंकार का सन्देश अथवा ज्ञान आम लोगों में बाँटे। इस्लाम में कहा गया है कि मुहम्मद आखरी पैगम्बर है, लेकिन सिख-धर्म में कहा गया है कि 'हर जुग जुग भक्त उपाया'। इसप्रकार सिख-धर्म 'इल्ला इल अल्लाह' से तो सहमत है, लेकिन 'सिर्फ़ मुहम्मद ही रसूल अल्लाह' है इस बात से सहमत नहीं।